

योगिनीहृदयम्

व्रजवल्लभद्विवेदः



Courtesy: Shri Tarun Dwivedi, Surviving Son of Late Vraj Vallabh Dwivediji (16 Jul 1926 - 17 Feb 2012)

विषय-सूची

उपोद्घात

योगिनीहृदय और दीपिका-१, मातृकाओं का परिचय-१, प्रस्तुत संस्करण-३, परापंचाशिका की मातृकाएँ-४, परापंचाशिका का परिचय-५, श्रीकुल (त्रिपुरा) का साहित्य-६, योगिनीहृदय और वामकेश्वर तन्त्र-९, योगिनीहृदय की टीकाएँ-१०, मूल और टीका में स्मृत ग्रन्थ-ग्रन्थकार-११, त्रिपुरा सम्प्रदाय की प्रवृत्ति-१३, चक्रसंकेत-१६, मन्त्रसंकेत (भावार्थ, सम्प्रदायार्थ, निगमार्थ, कौलिकार्थ, सर्व-रहस्यार्थ और महातत्त्वार्थ)-२१, पूजासंकेत (त्रिविध पूजा)-२९, जप-३१, पचास या इक्यावन पीठ-३३, नौ आधार-३४, वर्णों और तत्त्वों की उत्पत्ति-३६, कामकला-४०, छः अथवा आठ धातु-४१, व्याकुलाक्षर-४१, क्रम-व्युत्क्रम-४२, दीपिका की कुछ विसंगतियाँ-५३, आभार प्रदर्शन-४४

१. चक्रसंकेत

दीपिकाकार का मंगलअचरण	१-३
शास्त्र की अवतारणा	४-६
शास्त्र की गोपनीयता और परम्परा	६-८
शास्त्र के अनधिकारी	८-१०
शास्त्र के अधिकारी एवं शास्त्रज्ञान का फल	१०-११
संकेतत्रय का उद्देश	१२
संकेतत्रय के ज्ञान का फल और अनुबन्ध-चतुष्टय	१३
चक्रसंकेत का उपक्रम	१४
चक्र का अवतार क्रम	१४-१६
बैन्दव और त्रिकोण चक्र	१६-२०
कामकला का स्वरूप	१७-२१
नवयोनि अथवा अष्टार चक्र, उसकी अम्बिकारूपता	२१-२५
अन्तर्दशार चक्र	२५-२६
बहिर्दशार चक्र	२७-२८
चतुर्दशार चक्र, चक्रत्रय की रौद्रीरूपता	२८-२९
अवशिष्ट चक्रत्रय और उनकी वामा-ज्येष्ठतारूपता	३०
शान्त्यतीता आदि पांच शक्तियों (कलाओं) की श्रीचक्रमय वासना	३१
नौ चक्रों में स्थित शक्तियाँ और उनका स्वरूप (वासनान्तर)	३१-३३

चक्र की कामकलारूपता	३३-३४
अकुल आदि स्थानों में चक्र की त्रिविध भावना	३४-४२
अकुल और कुल मध्यवर्ती नवाधार निरूपण	३४-४०
बिन्दु से उन्मनी पर्यन्त नाद-कलाओं का स्वरूप और उच्चारण काल	४२-५२
देश और काल से अनवच्छिन्न निसर्गसुन्दर परम तत्त्व	५२-५३
अम्बिका आदि, शान्ता आदि शक्तियाँ तथा वाक्चतुष्टय	५३-५७
अम्बिका आदि, शान्ता आदि शक्तियाँ तथा पीठचतुष्टय	५७-६०
लिङ्गचतुष्टय	६०-६३
विद्या तथा शक्तिचतुष्टय आदि की वाच्यवाचकता	६३
जाग्रदादि अवस्था चतुष्टय	६४
स्वसंविदात्मक त्रैपुर स्वरूप की सर्वोत्कृष्टता	६४-७४
संवित् की मुद्रारूपता और मुद्रा पद की निरुक्ति	७४-७६
दशविध मुद्राओं का आन्तर और बाह्य स्वरूप	७६-८८
परम तत्त्व की चक्रमयता	८९-९०
श्रीचक्र की त्रिधा तथा नवधा भावना	९०-९४
श्रीचक्र का सृष्टि-संहार क्रम और त्रिपुरा चक्र के ज्ञान का फल	९४-९७
नौ चक्रों का स्वरूप और उनके नामों की निरुक्ति	९७-१००
श्रीचक्र में महात्रिपुरसुन्दरी की पूजा का विधान	१००-१०१
चक्रसंकेत की फलश्रुति	१०१-१०३

२. मन्त्रसंकेत

मन्त्रसंकेत का उपक्रम और उसके ज्ञान का फल	१०४-१०५
करशुद्धिकरी आदि नौ विद्याएं	१०५-१११
नौ विद्याओं का न्यास	१११-११३
अकुल आदि नवाधारों में चक्रेश्वरियों के साथ नौ चक्रों का न्यास	१०३-११४
त्रिपुरा आदि नौ चक्रेश्वरियों की नौ चक्रों में पूजा	११४-११५
नौ विद्याओं की एकाकारता	११६
मन्त्रसंकेत की षड्विधता	११६-११८
भावार्थ का निरूपण (श्रीविद्या का अक्षरार्थ)	११८-१३६
मातृकाचतुष्टय तथा कामकला	१२८-१३४
सम्प्रदायार्थ का निरूपण	१३६-१७४
विद्या की विश्वमयता तथा विश्वोत्तीर्णता	१३८-१४५
षट्त्रिंशत्तत्त्व निरूपण	१४६-१४९

त्रिविध प्रमाता (सकल, प्रलयाकल, विज्ञानाकल)	१६२-१६६
गुरु पारम्पर्य क्रम	१७२-१७३
निगमार्थ का निरूपण	१७४-१७७
कौलिकार्थ का निरूपण (चक्र, देवता, विद्या, गुरु और शिष्य की एकता)	१७८-१९८
वाक्चतुष्टय	१९१-१९४
सर्वरहस्यार्थ का निरूपण (स्वात्मबुद्धि)	१९८-२०९
महातत्त्वार्थ का निरूपण (विश्वोत्तोरण-विश्वमय तत्त्व में स्वात्मनियोजन)	२०२-२१२
महातत्त्वार्थ के अधिकारी और अनधिकारी	२१३-२१६
मन्त्रसंकेत की फलश्रुति	२१७-२१८

३. पूजासंकेत

त्रिविध पूजा—नाम और लक्षण	२१९-२२३
परा पूजा की श्रेष्ठता और उसका स्वरूप	२२३-२३०
बोढा न्यास (गणेश, ग्रह, नक्षत्र, योगिनी, राशि, पीठ)	२३०-२४२
श्रीचक्र न्यास (संहार क्रम)	२४३-२५९
श्रीचक्र न्यास (सृष्टि क्रम)	२५९-२६८
करशुद्ध्यादि न्यास	२६८-२६९
विद्या न्यास	२६९-२७१
तत्त्व न्यास	२७१-२७३
परा न्यास	२७३-२७४
चतुर्विध न्यास का कालविभाग	२७४-२७५
आसन परिकल्पन और बलिदान	२७५-२७७
विघ्नाप्रसारण और प्राकार-चिन्तन	२७७-२८०
सामान्यार्घ्य से सूर्य आदि नवग्रहों का पूजन	२८०-२८२
बाह्य श्रीचक्र का उद्धार व पुष्पांजलि निवेदन	२८२-२८५
सामान्यार्घ्य की विधि (वह्नि, सूर्य और इन्दु कलाओं का अर्चन)	२८५-२९२
विशेषार्घ्य की विधि	२९२
गुरुपादुका का पूजन	२९३
प्रसादग्रहण, आन्तर होम और पूर्णाहुति	२९४-२९९
श्रीचक्र की पूजा का क्रम	३००-३०१
गणेश, बटुकभैरव और गुरुपंक्ति का पूजन	३०१-३०२
बैन्दव चक्र में कामेश्वर-कामेश्वरी का अर्चन	३०२-३०७
नित्यक्लिन्ना आदि तिथिनित्याओं का पूजन	३०७-३०८, ३५७

प्रकटा आदि नौ योगिनियों का आवरण देवताओं के

साथ त्रैलोक्यमोहन आदि नौ चक्रों में पूजन	३०८-३५६
भूतलिपि का विन्यास क्रम	३२५-३४५
चक्रपूजा के बाद कुलदीप निवेदन	३५७-३५८
पुष्पांजलि समर्पण के बाद जपविधान	३५८
कूटत्रय तथा कुण्डलीत्रय में नाद की भावना	३५८-३६२
जप के समय शून्यषट्क आदि की भावना	३६३
शून्यषट्क की भावना का प्रकार	३६३-३६४
अवस्थापंचक की भावना का प्रकार	३६५-३६८
विधुवसप्तक की भावना का प्रकार	३६९-३७६
चक्रदेवताओं का तर्पण	३७६-३७८
नैमित्तिक पूजन	३७८-३७९
श्रीचक्र में ६४ करोड़ योगिनियों का निवास	३७९-३८०
अष्टाष्टक पूजा	३८०-३८१
गुरुपरम्परा से प्राप्त ज्ञान की फलवत्ता	३८१-३८२
नैवेद्य समर्पण एवं बलि निवेदन	३८२-३८७
शास्त्र की गोपनीयता	३८८
चुम्बक, ज्ञानलुब्ध और नास्तिकों की अनर्हता	३८८-३९०
ग्रन्थ की फलश्रुति	३९०-३९४

परिशिष्ट

परापञ्चाशिका आद्यनाथविरचिता	३९५-४००
योगिनीहृदय-श्लोकार्धानुक्रमणी	४०१-४१२
परापञ्चाशिका-श्लोकार्धानुक्रमणी	४१३-४१४
मूले दीपिकायां च स्मृता ग्रन्थ-ग्रन्थकाराः	४१५-४१६
संकेतपरिचयः	४१७-४१८
दीपिकोद्धृतवचनानुक्रमणी	४१९-४३४